इकाई 7 कांस्य युगीन सभ्यताएँः मुख्य विशेषताएँ*

इकाई की रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 कांस्य युग के लिए स्रोत

7.4 कांस्य युग में देश और काल

7.5 कांस्य युग में धातु

7.6 नगरीकरण

7.7 अधिशेष और श्रम का विनियोजन

7.8 लेखन

7.9 लंबी दूरी के संपर्क

7.10 कांस्य युगीन समाज

7.11 सारांश

7.12 शब्दावली

7.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.14 संदर्भ ग्रंथ

7.15 शैक्षणिक वीडियो

7.1 उद्देश्य

इस इकाई में हम एक ऐसे काल का अध्ययन करेंगे जिसे पुरातत्वविद और इतिहासकार कांस्य युग कहते हैं, यह एक ऐसा काल है जिसने मानव इतिहास में बसावट, तकनीक, साथ ही सामाजिक और आर्थिक संशलिष्टताओं के मामले में बड़ा परिवर्तन देखा। इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- 'कांस्य युग' शब्द के अर्थ की व्याख्या कर सकेंगे,
- कांस्य युग को सभ्यता की अवधारणा से जोड सकेंगे, और
- कांस्य युग द्वारा प्रस्तुत महत्वपूर्ण सामाजिक रूपों, विशेषकर शहरीकरण, लेखन तथा दूरस्थ संपर्क के क्षेत्र में, के परिणामों की पहचान कर सकेंगे।

7.2 प्रस्तावना

वी. गॉर्डन चाइल्ड के शब्दों में कांस्य युग मानव इतिहास के लिहाज़ से 'एक अत्यंत छोटा काल' था, फिर भी समाज के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। अपने आस-पास की सारी वस्तुएँ जिन्हें आज हम पहचानते हैं, मसलन शहर जहाँ हम रहते हैं, या जैसा शिल्प हम रचते हैं, या यातायात की तकनीकी, या यह तथ्य कि लेखन का उपयोग हम अभिलेखन के साधन की तरह करते हैं, इनमें से अधिकाँश का उद्भव करीब-करीब पांच हज़ार साल पहले हुआ था। यह एक ऐसा काल भी था जिसने कांस्य युग की पूर्व परिचित तकनीकों का चरमोत्कर्ष देखा। उदाहरण के लिए, कृषि या पशुपालन पौधों और पशुओं की प्रजातियों के साथ मनुष्यों के करीब दो हज़ार साल लम्बे प्रयोग का परिणाम था। परन्तु यह उत्पादकता का बढ़ा हुआ स्तर ही था जिसने अंततः ज़्यादा जटिल सामाजिक संरचनाओं की राह बनायी।

* प्रो. जया मेनन, शिव नाडर विश्वविद्यालय, नोएडा, उत्तर प्रदेश

चर्चा को शुरू करने के लिए हमें दो शब्दों का संज्ञान लेना ज़रूरी हैः 'कांस्य युग' और 'सभ्यता'। 'कांस्य युग' शब्द प्रत्यक्षतः एक ऐसे युग का द्योतक है जब अपने प्रमुख औज़ारों को बनाने के लिए मनुष्यों ने कांसे का उपयोग किया। इसका आशय यहाँ भौतिक पदार्थों के इस्तेमाल के एक अनुक्रम से है जब मनुष्यों ने पहली बार पत्थर का उपयोग किया, फिर तांबा-कांसा से होते हुए आखिरकार लोहे तक पहुंचे। यद्यपि यह सही है कि प्रमुख औज़ारों को बनाने में कांसे का उपयोग हुआ लेकिन 'कांस्य युग' शब्द का असली महत्व नगरीकरण और राज्य समाजों वाले एक विशिष्ट सामाजिक ढाँचे, दूसरे शब्दों में, सभ्यता से इसके परस्पर सम्बन्धों में है।

'सभ्यता' शब्द का उपयोग यहाँ परिष्कृत या परिशुद्ध के अर्थ में नहीं है। शेरीन रत्नागर के अनुसार यह 'सामाजिक विकास का एक चरण है, एक कमरे वाली झोपड़ियों से जटिल भवनों के स्थापत्य तक, मौखिक परम्परा से साक्षरता तक, ग्रामीण गृहस्थी से शहरी जीवन तक, और पत्थर पर निर्भरता से धातु और पत्थर तक' (रत्नागर, 2001: 13)। 'सभ्यता' का सम्बन्ध भौगोलिक विस्तार के माप से, एक ही तरह की (1) लेखन व्यवस्था; (2) कला संहिता; (3) धातुकर्म; और (4) शैली तकनीकों के समुच्चय का उपयोग करने वाले समूहों से भी है। पुरातात्त्विक आधार पर ये समानताएं बहुत बड़े भौगोलिक क्षेत्र में नियमितता की तरह प्रकट होती हैं। भौतिक सामग्रियों की नियमितता का यह योग उस व्यवस्था को बनाता है जिसे पुरातत्त्वविद 'संस्कृतियाँ' कहते हैं। पुरातात्विक अर्थों में संस्कृतियाँ एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र और कालावधि से प्राप्त संकलित पुरावशेषों के समूह के समान हैं। हड़प्पा सभ्यता दक्षिण एशिया में कांस्य युगीन 'संस्कृति' का एक उदाहरण है।

आरंभिक सभ्यताओं का तुलनात्मक विश्लेषण करने वाले ब्रूस ट्रिगर (2003) का विचार है कि सभ्यता विषयक 19वीं शताब्दी का विवेचन, लेखन को मूल विशेषता मानता है, क्योंकि इसने ही अभिलेखन और जटिल वाणिज्यिक लेन-देन को संभव किया। परन्तु इसके बाद गॉर्डन चाइल्ड (1950) ने आरंभिक सभ्यताओं या शहरी समाजों की दस विशिष्टताओं को इंगित किया। इसमें शामिल हैंः (1) बड़ी सघन आबादी; (2) अधिशेष द्वारा गैर-कृषक नागरिकों का जीवन यापन; (3) प्राथमिक उत्पादकों द्वारा किसी देवता या शासक को अधिशेष का भुगतान; (4) भव्य स्थापत्य; (5) एक शासक वर्ग; (6) अभिलेखन की प्रणाली; (7) वास्तविक विज्ञानों का विकास; (8) भव्य कला; (9) लम्बी दूरी का व्यापार और; (10) कुलीनों द्वारा नियंत्रित स्थानीय विशेषज्ञ शिल्पकार। यद्यपि चाइल्ड की तालिका को सभ्यता की अवधारणा समझने में पहला कदम माना जा सकता है, परन्तु लक्षणों की ऐसी तालिकाएँ समाज के वर्गीकरण में सहमतियों के बदले विवाद ही पैदा करती हैं।

ट्रिगर (2003: 44) का मानना है किः 'इसके बदले आरंभिक सभ्यताओं का एक ज़्यादा उपयोगी चरित्र-चित्रण अनिवार्यतः सामान्य सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक संस्थाओं और उस स्तर तक जटिल समाजों के काम करने के लिए ज़रूरी ज्ञान और विश्वासों के संयुक्त प्रकारों के अनुसार होना चाहिए। तकनीक, बसावट के पैटर्न, कला, और स्थापत्य को केवल इस रूप में समझा जा सकता है कि वे ऐसी संस्थाओं के भौतिक सहयोग में, सामाजिक मेल-मिलाप को संभव करने और समाज के अलग-अलग हिस्सों के विचारधारात्मक उद्देश्यों को बढ़ाने में क्या भूमिका निभाते हैं।'

7.3 कांस्य युग के लिए स्रोत

कांस्य युग के बारे में हम उपलब्ध लिखित रिकॉर्डों और उन समाजों के भौतिक अवशेषों, दोनों से ज्ञान प्राप्त करते हैं। कांस्य युग वह काल है जिसकी पहचान विभिन्न कार्यों के लिए लेखन का उपयोग है। इस प्रकार मेसोपोटामिया का लेखन **'कीलाकार' (cuneiform)** कहलाता है, जबकि मिस्री लेखन ने **'चित्रलिपि' (hieroglyph)** का रूप लिया। यद्यपि भौतिक साक्ष्यों का अधिकांश भाग लेखन से प्राप्त होता है, भौतिक और पुरातात्त्विक साक्ष्यों के दूसरे रूपों

में स्मारक, कला, और दिन-प्रतिदिन उपयोग की अनगिनत वस्तुएं (जैसे मृदभांड, आभूषण, औज़ार) भी शामिल हैं। भौतिक अवशेषों की एक सीमा उसकी प्रकृति के इर्द-गिर्द घूमती है: भौतिक सामग्री जैविक है या अजैविक। अधिकाँश स्थितियों में जैविक सामग्रियाँ (जैसे वस्त्र, बेंत, लकड़ियाँ), अजैविक सामग्रियों जैसे पत्थर, धातु और मृत्तिका की तरह बची नहीं रहतीं। हालांकि, मिस्र की अत्यंत शुष्क स्थितियों में लकड़ी, बेंत, और कपड़ों जैसी जैविक सामग्रियाँ भी बची रह गईं जो हमें लोगों की रोज़मर्रा की जिंदगियों में इनके व्यापक उपयोग का पता देती हैं।

चित्र 7.1 : मिस्र में वैली ऑफ़ किंग्स में स्थित फिरौन (Pharaoh) सेति I (मिस्र के उन्नीसवें राजवंश के नए राज्य का फिरौन) की कब्र से प्राप्त मिस्री चित्रलिपि

साभारः जॉन बॉड्स्वर्थ, 2007

स्रोतःhttps://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/c/c9/Hieroglyphs_from_the_tomb_of_Seti_I.jpg

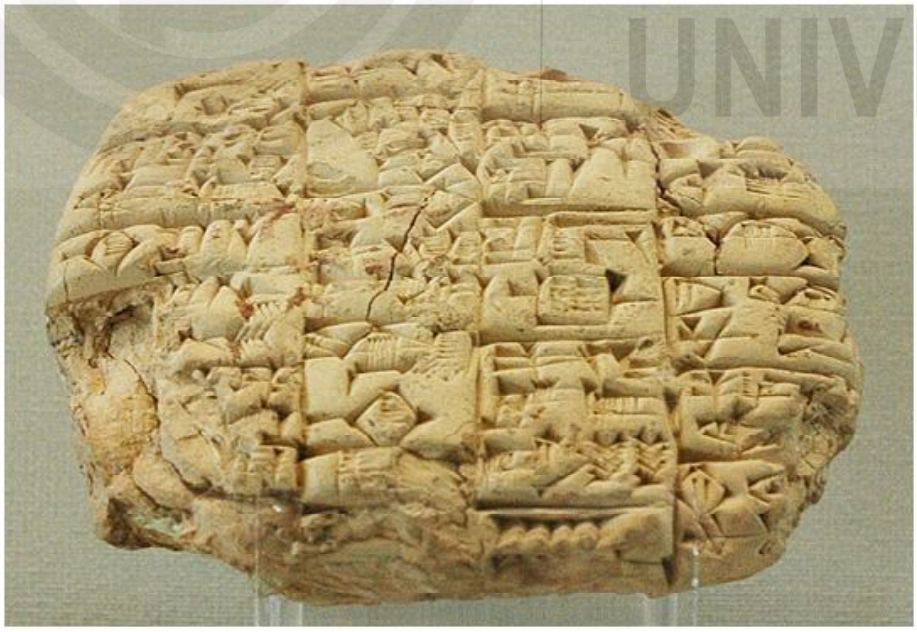

चित्र 7.2 : मिट्टी की पट्टिका पर लिखा पत्र जिसे लगाश के राजा को लुएना नामक उच्च-पुरोहित ने लगभग 2400 बी सी ई में भेजा। यह मेसोपोटामिया की आरम्भिक कीलाकर लिपि में लेखन को दर्शाता है। वर्तमान में यह पट्टिका पेरिस, फ्रांस के लूव्र संग्रहालय में प्रदर्शित है।

साभारः जस्त्रो, 2005

स्रोतःhttps://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/d/d5/Letter_Luenna_Louvre_AO4238.jpg

मेसोपोटामिया और मिस्र दोनों सभ्यताओं का इतिहास अधिकांशतः इन उपलब्ध लिखित स्रोतों पर आधारित हैं क्योंकि इन क्षेत्रों में इस लिपि को पढ़ लिया गया है। इसी समय मिस्री पिरामिड की संपदा और साथ ही मेसोपोटामियाई शहरों में मिले मंदिरों, महलों, और शाही क़ब्रों ने लम्बे समय से पुरातात्त्विक ध्यान को आकर्षित किया है। लेखन और समाधियों से प्राप्त संपदा हमें समाज के अभिजात्य वर्गों के जीवन का पता देती हैं। हाल ही के कुछ वर्षों से घरों और रोज़मर्रा की वस्तुओं के पुरातात्त्विक साक्ष्यों से समाज के दूसरे वर्गों को समझने की शुरुआत हुई है।

7.4 कांस्य युग में देश और काल

प्रमुख कांस्य युगीन सभ्यताएँ फ़रात (मेसोपोटामिया), नील (मिस्र), सिन्धु (हड़प्पा) और पीली नदी (शांग) (नक़्शे पर उनकी अवस्थिति के लिए देखें **मानचित्र 7.1**) की नदी घाटियों में मिलती हैं। **इकाई 8** मिस्र की सभ्यता के बारे में है, जबकि शांग सभ्यता पर **इकाई 9** में विचार किया जाएगा। कांस्य युग और सभ्यता दो अलग-अलग पहलू हैं। दुनिया का हर हिस्सा कांस्य युग से नहीं गुज़रा, फिर भी अगर हम दूसरी सभ्यताओं को देखें तो कई नाम दिमाग में आते हैं, जैसे क्लासिक माया (250-800 सी ई), उत्तर एज़्टेक (आरंभिक 16वीं सदी सी ई) और इंका (आरंभिक 16वीं सदी सी ई) (हालांकि ये सब समय में मेसोपोटामिया, मिस्र, हड़प्पा, और शांग के बाद हैं) **(नक्शे पर उनकी अवस्थिति के लिए देखें मानचित्र 7.1)**।

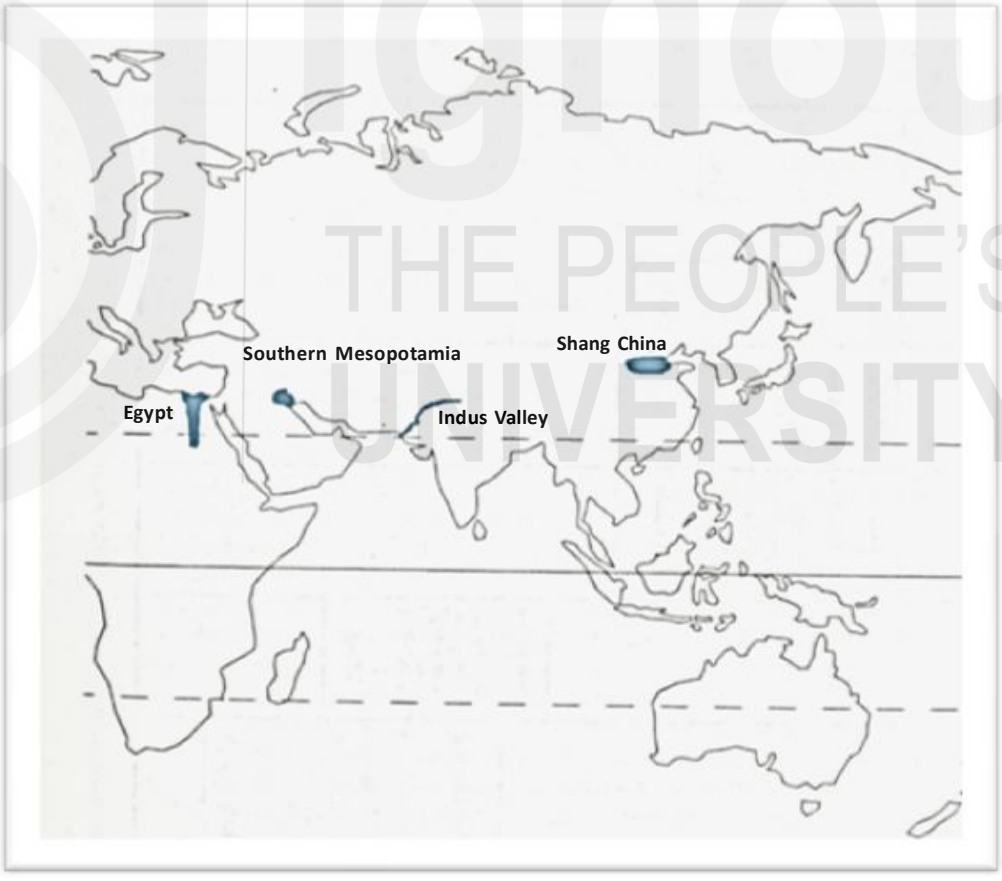

मानचित्र 7.1: आरंभिक कांस्य युगीन सभ्यताओं की अवस्थितियाँ
ब्रूस ट्रिगर, 2003: 31 पर आधारित

सभ्यताएँ कभी-कभी 'प्राथमिक' और 'द्वितीयक' में वर्गीकृत की जाती हैं। प्राथमिक सभ्यताएँ पुरानी दुनिया के हिस्सों में विकसित हुईं और जहाँ पहली बार इनके विशिष्ट चरित्र (जैसे नगरीकरण, लेखन, और लोगों के बीच सामाजिक-आर्थिक ऊँच-नीच) के दर्शन होते हैं। जिन क्षेत्रों में बाद में इन सभ्यताओं का विस्तार हुआ उन्हें द्वितीयक सभ्यताएँ कहते हैं। द्वितीयक सभ्यता की अवधारणा में विस्तार या विसरण दोनों ही हो सकते हैं। हालाँकि बहुत सारे क्षेत्र

जो पहले द्वितीयक सभ्यताओं में शामिल माने जाते थे अब विद्वान वहां देशज विकास के चिह्न देख रहे हैं, जो विसरण (diffusion) के विचार को नकारते हैं।

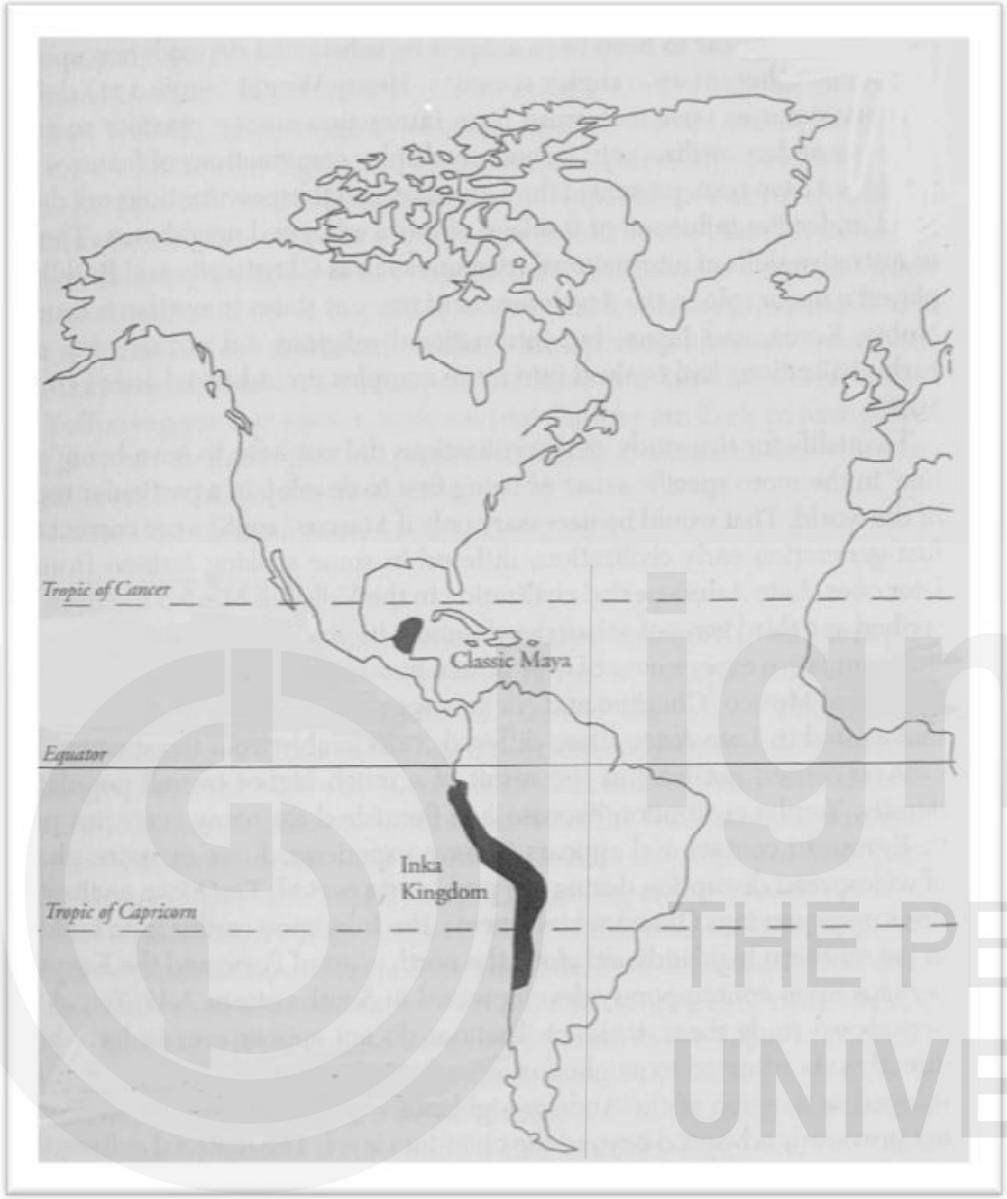

मानचित्र 7.2 : क्लासिक माया और इंका राज्यों की अवस्थिति

ब्रूस ट्रिगर, 2003: 30 पर आधारित

नदी घाटियों में आरंभिक सभ्यताओं का होना महज़ संयोग नहीं है। सभ्यताएँ और आरम्भिक राज्य संरचनाएँ जिस उच्च उत्पादकता पर निर्भर थीं उसे केवल कछारी मैदानों की उपजाऊ मिट्टी में ही हासिल किया जा सकता था। इन घाटियों में दूसरी अधिकाँश जरूरी कच्ची सामग्रियों का अभाव था, जैसे अच्छी किस्म की इमारती लकड़ी, धातुएं और पत्थर।

पुरानी दुनिया (मेसोपोटामिया और मिस्र) की सबसे आरंभिक सभ्यताओं का काल मोटे तौर पर चौथी और तीसरी सहस्त्राब्दी बी सी ई है। दक्षिण एशिया में हड़प्पाई कांस्य युग तीसरी सहस्त्राब्दी बी सी ई का उत्तरार्द्ध है। चीन की शांग सभ्यता और बाद की है जिसका काल दूसरी सहस्त्राब्दी बी सी ई का उत्तरार्द्ध है।

बोध प्रश्न-1

1) 'कांस्य युग' शब्द के अर्थ की व्याख्या कीजिए। 'सभ्यता' शब्द के साथ इसके सम्बन्धों को रेखांकित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) कांस्य युग को समझने के प्रमुख स्रोतों का विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सूची 'क' में दी गई नदी का मिलान सूची 'ख' में दी गई उससे संबंधित सभ्यता से करें।

क	**ख**
नदी	**सभ्यता**
a) फरात	i) मेसोपोटामिया
b) सिन्धु	ii) शांग चीन
c) पीली नदी	iii) मिस्री
d) नील	iv) हड़प्पाई

7.5 कांस्य युग में धातु

नयी धातु के रूप में तांबे का पहला उपयोग कांस्य युग के पहले हुआ, एक ऐसे काल में जिसे 'ताम्रपाषाण' कहा जाता है, या एक ऐसा काल जब तांबा और पत्थर दोनों का उपयोग औज़ार बनाने के लिए मुख्यतः होता था। औज़ार की प्राथमिक सामग्री के रूप में तांबा (यहाँ तक कि कांसा) अनिवार्यतः पत्थर की तुलना में ज़्यादा कारगर नहीं था। पत्थर का महत्व इसके टिकाऊपन, शक्ति, साथ ही सुप्राप्यता, और इससे औज़ार निर्माण में थी। परन्तु तांबे या कांसे की प्राथमिक सुविधा यह थी कि ढलाई की तकनीक द्वारा इनसे जटिल आकारों का निर्माण संभव था। इसका अर्थ था कि धातु को पिघला कर इस प्रकार ढाला जा सकता था कि पिघली हुई धातु अपने ढाले जाने वाले पात्र का आकार ग्रहण कर सकती थी। कांस्य युग में औज़ार निर्माण की प्राथमिक सामग्री तांबा और बहुधा इसकी मिश्र-धातु कांसा थी। कांसा दो धातुओं का मिश्रण होता है, बहुधा तांबा और टिन, लेकिन तांबा और सीसा या साथ-साथ तांबा और आर्सेनिक भी। टिन के संयोग से मिश्र-धातु शुद्ध तांबे से ज़्यादा कठोर हो जाती है जो औज़ार उत्पादन के लिए अधिक उपयुक्त साबित हुई। मिश्र-धातु तकनीक का मतलब था कि धातुकर्म इस हद तक विकसित हो चुका था जहाँ दो धातुओं के मिश्रण से एक नयी धातु का निर्माण हो सकता था। चाइल्ड का विचार है कि धातुकर्म की तकनीक के लिए ऊष्मा द्वारा पदार्थ के भौतिक गुणों में मूलगामी परिवर्तन का अंतरंग ज्ञान ज़रूरी था। इन कौशलों की प्रकृति के कारण धातु-कर्मी को वह संभवतः पहले-पहल विशेषज्ञों में एक मानते हैं।

कांस्य युग में टिन-कांसा पर निर्भरता के दूरगामी परिणाम हुए। तांबा विरल है उससे भी कहीं ज़्यादा टिन। इन सामग्रियों की आवश्यकता का मतलब था इन्हें कछारी मैदानों में, जो सभ्यता

के केंद्र थे, वहां लाना। बहुत संभव था कि शिल्पी, जैसे धातु-कर्मी अयस्कों के स्रोत तक जाते हों, उन्हें पिघलाते और काम के लिए धातुओं को शुद्ध रूप में वापस ले आते हों। इस प्रकार इस शिल्प ने कुछ हद तक गतिशीलता को अनिवार्य बनाया होगा।

कांस्य युग में औज़ारों की कच्ची सामग्री के रूप में धातु ने पूरी तरह पत्थर को विस्थापित नहीं किया। दक्षिण एशिया में हड़प्पावासियों ने सिंध में सिन्धु नदी के किनारे रोहरी की चट्टानों से प्राप्त अच्छी किस्म के बिल्लौर पत्थर (chertः एक प्रकार का पत्थर) से ब्लेड बनाना जारी रखा। पुरातात्त्विक रूप से हमें टूटे और मुड़े हुए ताम्र औज़ार और वस्तुएं मिलती हैं जो संभवतः पुनर्चक्रण (गला कर पुनः उपयोग) के लिए रखी जाती थीं।

तांबे और कांसे के पुनर्चक्रण का फायदा इसलिए संभव था क्योंकि इन सामग्रियों की प्रकृति के कारण इन्हें पिघला कर नए रूपों में ढाला जा सकता था। ताम्र औज़ारों और वस्तुओं के भण्डार उस समाज में धातु विशेष के महत्व और इनकी विरलता की ओर संकेत करते हैं, इसी प्रकार पुनरूपयोग के लिए इनके परिरक्षण की ज़रुरत की ओर भी।

7.6 नगरीकरण

नगरीकरण के साथ जुड़ाव कांस्य युग के प्राथमिक चरित्रों में से एक है। गॉर्डन चाइल्ड नगरीकरण के विकास को क्रान्ति की तरह देखते हैं जिसे वह 'नगरीय क्रांति' कहते हैं। हमने पहले देखा कि वह नगरीकरण की पहचान कुछ विशिष्ट पुरातात्त्विक लक्षणों से करते हैं। अगर कोई उनकी नगरीकरण के लक्षणों की तालिका से पूर्णतः सहमत न भी हो फिर भी यह स्पष्ट है कि कांस्य युग की प्रमुख पहचान नगर हैं। कई नगर, जैसे मेसोपोटामिया में उर और उरुक और दक्षिण एशिया में मोहनजोदड़ो और हड़प्पा, कांस्य युगीन नगरों के शीर्ष प्रतीक हैं। हम उनमें चाइल्ड के लक्षणों को देख सकते हैंः भव्य स्थापत्य, लेखन, कला, माप की व्यवस्था, कृषि अधिशेष के सहारे गैर-कृषि व्यवसाय और विशेषज्ञता की वृद्धि, सामाजिक असमानता, और लम्बी दूरी के व्यापार।

नगरीकरण एक सुरक्षित कृषि आधार पर निर्भर करता है। हमें अवश्य ही ध्यान देना चाहिए कि उपजाऊ अर्धचंद्राकार क्षेत्र (Fertile Crescent; लेवांट से ईरान तक चापाकार आकृति में फैला क्षेत्र) के उत्तरी पहाड़ी इलाके बहुत पहले, करीब दस हजार से आठ हजार साल पूर्व, ही खेती और पशुपालन की शुरुआत के साक्षी रहे हैं। परंतु इन इलाकों में नगरों का विकास नहीं हुआ। नगरीय विकास के लिए लोगों को दक्षिणी मेसोपोटामिया के वृहत कछारी मैदानों में आना पड़ा। यह एक क्रमिक आन्दोलन था। सबसे पहले पहाड़ी इलाकों से आधुनिक बग़दाद के इलाके के उत्तरी कछारों में, फिर बड़े-पैमाने पर आबादी का कछारी मैदानों के उत्तरी हिस्से से दक्षिणी कछारों की ओर प्रवास की शुरुआत प्रारंभिक-मध्य उरुक काल (4000-3400 बी सी ई) में हुई लेकिन प्रभावी रूप से इसकी पहचान प्रौढ़ उरुक काल (3400-3200 बी सी ई) में ही हुई।

मेसोपोटामिया में शहरी विकास पर लिखने वाले रॉबर्ट एडम्स (1972) मानते हैं कि दक्षिणी कछारी क्षेत्रों में नगरों का विकास कई कारकों का संभव परिणाम थाः बड़ी संख्या में ग्रामीणों का दक्षिण की ओर प्रवास के साथ ही अभी तक घूमंतू रहने वाले लोगों के बसने के कारण। इसके कारण उरुक जैसे दक्षिणी कछारी नगरों की आबादी में बहुत बढ़ोतरी हुई। आबादी में ऐसी वृद्धि को महज़ एक नगर के भौतिक आकार-विस्तार से देखा जा सकता हैः आरंभिक उरुक काल के सत्तर हेक्टेयर से प्रौढ़ उरुक काल तक आते-आते उरुक सौ हेक्टेयर का हो जाता है और अंततः आरंभिक राजवंश काल (3000-2350 बी सी ई) में विशाल चार सौ हेक्टेयर तक बढ़ जाता है। आबादी की ऐसी ही गतिशीलता दक्षिण एशिया में भी देखी जा सकती है, बलुचिस्तान इलाके की पहाड़ियों से सिन्धु घाटी तक। प्रौढ़ हड़प्पाई काल में घाटी

के इलाकों पर लोगों के कब्ज़े से पहले पहाड़ी ढलानों की आरंभिक हड़प्पाई बस्तियाँ और उसी तरह घाटी में आरंभिक आगमन और बस्तियाँ भी आवश्यक रूप से काफी छोटी थीं। अंततोगत्वा मोहनजोदड़ो आकार में सौ हेक्टेयर से भी ज़्यादा हो गया (विस्तार के लिए, देखें, **इकाई 7, बी एच आई सी-101: भारत का इतिहास-1**)। दोनों मामलों में, बड़े पैमाने पर कृषि उत्पादकता में बढ़ोतरी छोटी पहाड़ी घाटियों में नहीं अपितु महान् नदियों की विस्तृत घाटियों में ही संभव थी।

कृषि उत्पादकता का करीबी सम्बन्ध सालाना और नियमित रूप से अपने किनारों को आप्लावित करने वाली हमेशा जल से भरी नदियों द्वारा जमा होने वाली गाद से था। कृषि उत्पादकता जोत की तकनीक पर भी निर्भर थी। बीज बोने वाला हल (seeder-plough) जैसा नवीन तकनीकी प्रयोग मेसोपोटामियाई कृषि की पहचान थी, जिसने रोपण, बीजों की कम बर्बादी, और अच्छे समय में 1:76 जैसे अत्यधिक बीज-पैदावार अनुपात को भी संभव बनाया। बहुत संभव है कि जैसा उच्च-नगरीकरण हम देखते हैं वह मेसोपोटामियाई कृषि की उच्च उत्पादकता का परिणाम हो, उदाहरण के लिए, उरुक के मामले में हम देखते हैं कि यह तीसरी सहस्त्राब्दी की शुरुआत तक चार सौ हेक्टेयर का आकर अख्तियार कर लेता है।

आरंभिक कांस्य युगीन समाजों के लिए कृषि उत्पादकता इतनी महत्वपूर्ण क्यों थी? बहुत कुछ अभी की तरह ही उच्च कृषि उत्पादकता दूसरे विशेषीकृत लेकिन गैर-कृषि कार्यों में लगे लोगों के पोषण को मजबूत आर्थिक आधार उपलब्ध कराती है। मुद्रा के अभाव में काम करने वाला एक कांस्य युगीन समाज ऐसा इसलिए कर पाया क्योंकि इसकी उत्पादकता ने उत्पादन में हिस्सा न लेने वाले गैर-कृषकों के निर्वाह को भी संभव किया। नगर प्राथमिक रूप से अपने द्वितीयक पेशों से पहचाने जाते हैं, जहाँ लिपिक, सौदागर, शिल्पी, और आनुष्ठानिक पुरोहितों जैसे विशेषज्ञों की जगह होती है। ऐसे पेशे नगरों में इसलिए फलते-फूलते हैं क्योंकि नगरीय केन्द्रों के भीतर या सीमांत पर रहने वाले प्राथमिक उत्पादकों से अधिशेष आता रहता है।

7.7 अधिशेष और श्रम का विनियोजन

अधिशेष और शासक समूह, आरंभिक शहरों के लिए चाइल्ड की यह दो कसौटियां महत्वपूर्ण हैं। अधिशेष केवल निर्वाह के लिए ज़रूरी न्यूनतम से अधिक और ऊपर का अतिरिक्त उत्पादन/आमदनी मात्र ही नहीं है बल्कि अधिशेष में एक राजनीतिक सत्ता निहित है जो अधिशेष के संचय को संभव बनाती है। मेसोपोटामिया की बड़ी सार्वजनिक संस्थाओं (जैसे कि मंदिर, महल, और लोक अधिकारियों या कुलीन समूहों को हासिल विस्तृत भू-क्षेत्र या जागीरें) को हम ऐसी क्रियाविधि की तरह देख सकते हैं जिससे अधिशेष का उत्पादन और संचयन होता था। सूज़न पोलॉक (1999: 118) इन जागीरों को गृहस्थी-आधारित अर्थतंत्र के समेकित हिस्से की तरह व्याख्यायित करती हैं। मंदिरों, महलों और जागीरों को **'ओइकोइ'** ('गृहस्थियों' के लिए ग्रीक शब्द से व्युत्पन्न) या फिर 'महा गृहस्थी' कहा गया है। ये सब अधिकतर गैर-नातेदारी आधारित, प्रबंधकीय पदों के कर्मचारियों की शक्ति पर निर्भर, साथ में जानवरों के झुंडों, चरागाहों, मैदानों, बागीचों, भंडारण सुविधाओं, और शिल्पियों की कार्यशालाओं वाली बड़ी सामाजिक-आर्थिक इकाईयां थीं। ओइकोस, समुदाय की भेंट पर निर्भर अर्थनीति से दूर ऐसे परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता था जहाँ ओइकोस की अपनी विविध और बड़ी कार्यशक्ति थी।

ओइकोस के द्वारा उत्पादित ज़रूरतों (खाद्यान, तेल, वस्त्र) का उपयोग संस्थानों में स्थित गैर-कृषि उत्पादक गतिविधियों में लगे कर्मचारियों और साथ ही इन संस्थानों के लिए काम करने आने वालों के पोषण के लिए होता था। राज्य द्वारा गैर-कृषक विशेषज्ञों में अधिशेष के पुनर्वितरण का यह चक्र कांस्य युगीन अर्थव्यवस्था में अन्तर्निहित था। अधिशेष के इन्हीं वितरणों के भीतर से हम कांस्य युगीन भव्य स्थापत्य, जैसे मेसोपोटामिया के मंदिरों और

महलों, मिस्र के पिरामिडों, और मोहनजोदड़ो के नगर-दुर्ग टीले पर बने विशिष्ट स्थापत्य के निर्माण को देख सकते हैं। केवल यही नहीं, मेसोपोटामियाई मंदिर अभिलेख हमें सूचित करते हैं कि लिपिक, कुम्हार, और दूसरे शिल्पी, चरवाहे, और सौदागर मंदिरों में ही रहते थे और उनके लिए काम करते थे। श्रम-शक्ति बहुत अधिक विशेषीकृत थी और सेवा की शर्तें अंशकालिक और ठेके से लेकर स्थायी श्रम अनुबंध तक नानारूपी थीं।

मिस्र के सन्दर्भ में बैरी कैम्प (1991) बताते हैं कि मंदिर कर्मचारी समूहों में विभाजित थे और संभवतः अलग-अलग समय काम करते थे और प्रत्येक उप-विभाग दस में से एक महीने सेवा देता था। बाकी समय वे अपने गाँवों में कृषि और अन्य कार्य सम्पन्न करते थे, लेकिन मंदिरों की प्रतिष्ठा के नाते वे मंदिरों को अपना श्रम देते और एवज़ में खान-पान के रूप में कुछ सांत्वना भी पाते। 'इसका व्यवहारिक फल था राज्य द्वारा नौकरियों की व्यापक हिस्सेदारी। कर्मचारियों की संख्या की आवश्यकता कई गुणा बढ़ गयी थी जिससे राज्य द्वारा आंशिक सहयोग पाने वाले लोग भी बढ़ गए। चूंकि यह व्यवस्था केवल अंशकालिक थी, इसलिए अनावश्यक कर्मचारियों की उपस्थिति से यह अवरुद्ध नहीं हुई' (कैम्प, 1991: 113)। हम यहाँ जो देख रहे हैं वह है पुरोहितों और राज्य की संस्थाओं द्वारा श्रम का व्यापक विनियोजन। उच्च स्तरीय विशेषीकरण वाली कांस्य युगीन अर्थव्यवस्था मुद्रा के अभाव में श्रम विनियोजन के ऐसे ही किसी तंत्र के माध्यम से कार्य कर सकती थी।

बोध प्रश्न-2

1) पत्थर की तुलना में तांबा और कांसा के उपयोग के फायदे बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

2) नगरीकरण क्या है? शहरी संस्कृतियों की तीन प्रमुख विशेषताएँ बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

3) कांस्य युगीन अर्थव्यवस्था में 'महा गृहस्थियों' का क्या कार्य था?

.....

.....

.....

.....

.....

4) मुद्रा के अभाव में कांस्य युगीन अर्थव्यवस्था कैसे काम करती थी?

.....

.....

.....

.....

7.8 लेखन

श्रम के विनियोजन और बड़ी संस्थाओं और जागीरों के रख-रखाव ने अभिलेखन कार्य को अनिवार्य बनाया। भले ही शुरुआती समाजों में गिनती की सरल व्यवस्थाएं रही हों, विभिन्न आदान-प्रदानों को याद रखने तथा कब, कहाँ और किस प्रकार के लेन-देन हुए इसके अभिलेखन के तरीकों ने जटिल सांकेतिक व्यवस्थाओं को आवश्यक बना दिया। कांस्य युग में लेखन का विकास बड़ी जागीरों द्वारा विविध प्रकार के अभिलेख रखने में तथा खेतों की पैदावार का; जानवरों के झुण्ड की संख्या का; शिल्पकारों को आवंटित कच्चे माल का; शिल्पियों के उत्पादन का; सौदागरों द्वारा लाये गए कच्चे माल आदि का रिकार्ड रखने में हुआ।

अभिलेखन उद्देश्यों में शुरुआती उपयोग के अनंतर लेखन का दायरा बढ़ते हुए मिथकों, स्तुति गीतों व भजनों, आधारभूत कहानियों, शाही शिलालेखों और अंततः कानूनी कोड को भी शामिल कर लेता है। साक्षरता का व्यापक प्रसार संभव नहीं था, और समाज के बहुत छोटे से हिस्से के पास पढ़ने और लिखने की योग्यता थी। यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं होगा कि इस योग्यता के साथ बड़ी शक्ति भी आई।

अलग-अलग कांस्य युगीन समाजों में लेखन ने अलग-अलग रूप ग्रहण किया। मसलन, मेसोपोटामिया में लेखन कीलाकर लिपि (विस्तार के लिए नीचे वर्णित बॉक्स देखें) में विकसित हुई। लेखन के आरंभिक रूप आज उपयोग में नहीं हैं इसलिए इतिहासकारों और पुरातत्त्वविदों के लिए इन्हें पढ़कर समझना ज़रूरी था। पत्थर और मृत्तिका से बनी लेखन युक्त वस्तुएँ अपने लेखों के माध्यम से महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सूचनाएँ प्रदान करती हैं। इन आरंभिक लिखित साक्ष्यों के सहारे हमें आरंभिक समाजों, उनके लेन-देन, उनके सामाजिक संबंधों, उनके शासकों और देवताओं, उनके रीति-रिवाजों, और उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं का पता चलता है।

कीलाकार लिपि

- सबसे पुराना लेखन उरुक शहर के एन्ना मंदिर के अहाते में करीब 3200 बी सी ई के स्तरों से मिला था।
- मुख्यतः अलग-अलग आकार की मिट्टी की पट्टिकाओं पर लेखन मिले।
- कछारी परिवेश में अपने बाहुल्य और आसानी से पट्टिका निर्माण के कारण मिट्टी उपयोगी थी (देखें **चित्र 7.2**)।
- लेखन ने जैसा रूप लिया उसे अक्षरों के रूप के आधार पर 'कीलाकार' या फन्नी के आकार का लेखन कहा जाता है।
- अक्षरों का कील आकार उस कलम के कारण था जिससे भीगी मिट्टी में दबा कर चिह्न बनाये जाते थे।
- कीलाकार विभिन्न भाषाओं जैसे सुमेरियन और अक्कादियन के लेखन में उपयोग की जाती थी।
- लेखन का सबसे शुरुआती उपयोग मंदिर और महल जैसी बड़ी सार्वजानिक संस्थाओं में होने वाले लेन देन के रिकॉर्ड के प्रशासकीय उद्देश्यों के लिए हुआ।
- लेखन का उपयोग समान प्रवर्गों वाले शब्दों की तालिका, जिसे 'कोश तालिका' कहा जाता है, के निर्माण में भी होता था, उदहारण के लिए, *पेशों की मानक तालिका* विभिन्न पेशों के 120 शब्दों का अभिलेखन (रिकॉर्ड) करती है।
- तीसरी सहस्त्राब्दी बी सी ई के मध्य से लेखन का उपयोग भूमि, घर, या दासों पर अधिकारों के हस्तांतरण के अभिलेखन के साथ-साथ शाही लेखों और साहित्यिक पाठों के लिए भी होने लगा था।

(स्रोतः जे.एन. पोस्टगेट, 1992)

7.9 लंबी दूरी के संपर्क

कांस्य युगीन सभ्यताओं की कछारी नदी घाटियों में धातुओं, लकड़ी, और अधिकांश प्रकार के पत्थरों की कमी थी। तांबे और टिन पर निर्भरता तथा कछारी घाटियों में उनकी विरलता का अर्थ था कि धातुओं की प्राप्ति अधिकतर बहुत दूर से होती रही होगी। इस प्रकार कांस्य युगीन दुनिया काफी विस्तृत थी। सीमांत क्षेत्र अधिकतर भौतिक विशिष्टताओं द्वारा निर्धारित होते थे, यथा नदियाँ या पहाड़ी श्रृंखलाओं से, परन्तु विभिन्न इलाकों में आमतौर पर राज्य द्वारा उनका सीमांकन, रख-रखाव, और प्रशासन किया जाता था। अतः ज़रूरी सामग्री विभिन्न तरीकों से लायी जाती थी। राज्य कच्चा माल प्राप्त करने के लिए अभियानों का आयोजन करते थे, जैसे पत्थरों और धातुओं के लिए मिस्रियों ने सिनाई पर चढ़ाई की। मेसोपोटामियाई मंदिर निर्माण तथा जहाज़-निर्माण के लिए उच्च कोटि की इमारती लकड़ियों, और सजावट के लिए कीमती पत्थरों जैसी जरूरी सामग्रियों की प्राप्ति के लिए शासकों के प्रयत्नों पर निर्भर थे। मिथकों और कहानियों से इसकी कुछ जानकारी मिलती है। ऐसी ही एक कहानी उरुक के राजा एंमेरकर और एन्ना के मंदिर को सजाने के लिए लाजवर्द, कार्नेलियन और ऐसी ही अन्य दूसरी कीमती चीजें पाने के लिए पहाड़ों की सात श्रृंखलाओं पार अरत्ता नामक भूमि के राजा के साथ उसके समझौते के बारे में है। दूत आते-जाते हैं और कुछ समय बाद कीमती सामानों का एक जखीरा अनाज लदे गदहों के एक कारवाँ के बदले प्राप्त किया जाता है। कहानी का एक हिस्सा यूँ हैः

> स्वामी ने तब अपना मुख्य भंडारा खोल दिया... अन्नागार की जौ को उसने पूरी तरह तोला, (यहाँ तक कि) टिड्डी के खाने के हिस्से को भी जोड़ना नहीं भूला। बोझा ढ़ोने वाले गदहों को लादने के बाद – बच गए गदहों को एक किनारे लगाने के बाद – राजा, गहरी प्रज्ञा का स्वामी, उरुक का स्वामी, कुलाबा का स्वामी ने उनको सीधे अरत्ता के लिए रवाना किया। अरत्ता में लोग सूराख से निकली चींटियों की तरह भरे-पूरे घूम रहे थे... दूत के अरत्ता पहुंचने के बाद, अरत्ता के लोग भारवाहक गदहों को आश्चर्य से देखते खड़े हो गए। अरत्ता के प्रांगण में अन्नागार की जौ को दूत ने पूरी तरह तौला, (यहाँ तक कि) टिड्डी के खाने के हिस्से को भी जोड़ना नहीं भूला, ऐसा लगा मानो स्वर्ग की बारिश और चमकते सूर्य की तरह अरत्ता धन-धान्य से भर गया। जब तक देव-गण अपनी शय्या पर साथ-साथ लेटे तब तक अरत्ता अपनी भूख मिटा चुका था (**पोस्टगेट, 1992 से उद्धृत**)।

इसी तरह उरुक के अर्द्ध-मिथकीय राजा गिलगमेश का मिथक हमें बताता है कि कैसे वह एक मंदिर हेतु देवदार वृक्ष लाने के लिए आज के लेबनान जैसे सुदूर उत्तर स्थित 'देवदार वन' तक चला गया था। जिस काम को आमतौर पर छह सप्ताह लगते उसे वह तीन दिनों में कर देता थ, जो कि मिथकों में बहुत सहज है, लेकिन इससे कच्चे माल की प्राप्ति हेतु होने वाले आक्रामक अभियानों का पता चलता है।

गिलगमेश का महाकाव्य

- स्टेफ़नी डैली (1989) लिखते हैंः '*गिलगमेश का महाकाव्य* कीलाकार अक्कादियन में लिखी सबसे लंबी और महान् साहित्यिक कृति है। एक ऐसा आदमी जिसके पास मित्रता, धैर्य और जोखिम की, खुशी और गम की अपूर्व क्षमता है, उस एक शक्तिशाली और शक्तिहीन मनुष्य द्वारा यश और अमरता की साहसिक खोज की यह कहानी है...'।
- सबसे आरंभिक लिखित प्रारूप की तारीख़ 2150 बी सी ई की है, लेकिन दूसरी अन्य कहानियों की तरह संभवतः मौखिक रूप में यह पहले से ही प्रचलित थी।
- इसे महाकाव्य माना जाता है क्योंकि यह एक अर्द्ध-ऐतिहासिक और आंशिक रूप से मिथकीय चरित्र की साहसिक गाथा है, जहाँ देव और देवियाँ हाशिये पर कई किरदार निभाते हैं।
- गिलगमेश का देवत्व उसकी दो तिहाई प्रकृति में है जिसे उसने अपनी माता निन्सुन, देवी वन्य गौ (Lady Wild Cow) से प्राप्त किया था।

- गिलगमेश को एक ऐतिहासिक चरित्र माना जाता है क्योंकि उसके पिता का नाम सुमेरी राजाओं की सूची में उरुक के राजा लुगाल्बंदा के रूप में आता है।
- गिलगमेश की ऐतिहासिकता इस तथ्य से भी प्रकट होती है कि गिलगमेश को उर के तीसरे राजवंश के शासकों का पूर्वज माना जाता है और इससे पता चलता है कि महाकाव्य के संस्करण अलग-अलग शहरों में प्रचलित थे। उर का महान् शासक शुल्गी जिसने 2150-2103 बी सी ई में शासन किया गिलगमेश की कहानियों में बहुत रुचि लेता था। इसके लिए उसने निन्सुन को अपनी माता बताया, इस संदर्भ में उसने गिलगमेश को अपना भाई बनाया।
- स्पष्टतः महाकाव्य में कई छोटी-छोटी कहानियाँ एक साथ बुनी गयी थीं। इसी तरह की एक कहानी गिलगमेश और देवदार वनों के पहरेदार राक्षस हुवावा (या हम्बाबा) की है जो सुमेरी और अक्कादियन संस्करण क्रमशः ज़ाग्रोस पहाड़ों के पूरब और लेबनान के पश्चिम में हैं। यह पुनः अन्य कई मिथकों की तरह कहानियों के कई प्रचलित रूपों की ओर इशारा करता है।
- *गिलगमेश के महाकाव्य* में कई पहलू हैंः मित्रता का मोटिफ (गिलगमेश और एन्किदु), सामग्रियों की खोज (उत्कृष्ट इमारती लकड़ियों के स्रोत देवदार पर्वत पर चढ़ाई), और अमरता की खोज (एन्किदु की मौत पर गिलगमेश की व्यथा)।

चित्र 7.3 : गिलगमेश के महाकाव्य की नव-असीरियन मिट्टी की पट्टिका (संख्या 11) जिसमें 'बाढ़ की कहानी' नामक कहानी वर्णित है

इस पटिया को 'बाढ़ पट्टिका' भी कहा जाता है।

यह पट्टिका वर्तमान में ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन में सुरक्षित है।

साभारः बाबेलस्टोन, 2010

स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/7/7aBritish_Museum_Flood_Tablet.jpg

मेसोपोटामियाई कीलाकार अभिलेख दूर-दराज के इलाकों से संपर्क की जानकारी देते हैं, जैसे दिलमुन (बहरीन के द्वीप के रूप में पहचान), मागन (ओमान के साथ पहचान), और मेलुहा (कई विद्वान हड़प्पा के साथ जोड़कर देखते हैं)। ये अभिलेख मेसोपोटामिया आने वाली सामग्रियों के बारे में बताते हैं, जैसे तांबा, अर्द्ध-कीमती पत्थर, डायोराइट (diorite) और निर्मित सामान। कांस्य युग में बहुत सारी ऐसी सामग्रियाँ जो सीमाओं के आर-पार आती-जाती थीं उनकी प्रकृति संभवतः ऐशो आराम की वस्तुओं की थी या वे शहरों में स्थित बड़ी संस्थाओं के उपभोग में आती थीं।

ऐसे दूरस्थ संपर्क सामानों के आवागमन से कुछ अधिक का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। बहुत संभव है कि लोगों के साथ विचार, तकनीक, मिथक, भाषाएँ, और रीति-रिवाजों की आवाजाही भी होती रही हो।

7.10 कांस्य युगीन समाज

लुइस विर्थ (1938) शहर को सामाजिक आधार पर परिभाषित करते हैं, सामाजिक रूप से असमांगी व्यक्तियों द्वारा बसी हुई सापेक्षिक रूप से बड़ी, घनी और स्थायी बस्ती के रूप में। हमें याद रखना चाहिए कि लोग अक्सर आप्रवास करते हैं और शहर में रहने आते हैं। मेसोपोटामिया में नगरीकरण के एडम्स के सिद्धांत को देखने से हमें नगरों में काफी विविधता नजर आती है। दक्षिणी कछारों के नगर ऐसी जगहें थीं जहाँ लोगों का प्रवासन हुआ और हम बड़ी संख्या में ग्रामीणों और उन लोगों की आवाजाही देखते हैं जो पहले घूमंतू थे और जो अब नगरों में बसने लगे थे। इन आरंभिक नगरों की ओर लोगों का आगमन कई कारणों से हुआ जैसा कि हमने पिछले भाग में विचार किया है। इससे एक ऐसी स्थिति पैदा हुई जहाँ हर कोई एक दूसरे को नहीं जानता था तथा लोग और समुदाय अलग-अलग थे। संभवतः नगरवासियों का अनुभव अब गुमनामी और नगर की सीमा में आमने-सामने आने वाले अजनबी रिश्तों से हुआ।

ट्रिगर (2003: 44) ध्यान दिलाते हैं कि 'सामाजिक सम्बन्धों का मुख्य आधार रक्त-सम्बन्धों और नातेदारी में नहीं था बल्कि सामाजिक विभाजनों का एक श्रेणीक्रम था जो क्षैतिज रूप से सभी समाजों में व्याप्त था तथा वे शक्ति, सम्पदा, और सामाजिक मर्यादा में असमान थे।' साफ़ तौर पर नहीं कहा जा सकता कि ये श्रेणियाँ वर्गों का प्रतिनिधित्व करती थीं। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इन समाजों में संपत्ति, शक्ति, और मर्यादा में घनिष्ठ सम्बन्ध थे। हमें जानकारी मिलती है कि ऐसे व्यक्ति और परिवार थे जिनके पास राजनीतिक शक्ति थी और कुछ ऐसे थे जिनकी आनुष्ठानिक भूमिका थी और ये दोनों उच्च ओहदे और संपत्ति प्रदर्शित करते थे। यह भी संभव है जो लोग बड़ी संस्थाओं जैसे मंदिर या महल में स्थायी रूप से काम करते थे उनके पास अत्यधिक शक्ति और प्रतिष्ठा तथा साथ ही उनकी संपत्ति तक पहुँच थी।

संपत्ति के स्रोत के बारे में यह प्रश्न उठता है कि क्या संपत्ति को भूमि और उस पर स्वामित्व की तरह देखा जाता था? बहुत संभव है कि भूमि नातेदारी-सम्बन्धी समुदायों के नियंत्रण में हो, पर ऐसा भी लगता है कि उच्च-दर्जे के व्यक्तियों ने भूमि के बड़े हिस्से पर अधिकार जमाना शुरू कर दिया था। इसके उलट कई व्यक्ति ऐसे थे जिनका भूमि पर कोई अधिकार नहीं था लेकिन उन्होंने अपने श्रम के सहारे अर्थव्यवस्था में भागीदारी की। ये लोग अक्सर किसी 'महा गृहस्थी' (ओइकोस) के आश्रित सदस्य होते थे। दूसरी ओर, पूर्णतः निर्भर और निम्न हैसियत के लोग, ख़ासकर महिलाएं और बच्चे, संभवतः युद्ध-बंदी थे।

सामाजिक पदानुक्रम के बावजूद कांस्य युगीन समाजों की पहचान नातेदारी पर आधारित पहले से चली आ रही परम्परा से संबंधित थी। ऊपर हमने देखा कि नातेदारी सम्बन्धी समुदाय भूस्वामित्व के सन्दर्भ में अस्तित्व में बने रहे। आरंभिक मेसोपोटामियाई समाजों ने सामूहिक

स्वामित्व की प्रथा का पालन किया जो संभवतः अधिक व्यावहारिक था क्योंकि निजी स्वामित्व जोत की ज़मीन को विखंडित करता जाता। भूमि पर संयुक्त नियंत्रण का मतलब यह भी था कि सबसे अच्छी भूमि (मसलन जो नदी या सिंचाई नहरों के समीप हो) पर खेती एक ही परिवार के द्वारा नहीं की जा सकती थी, और उन्हें लगातार बदला जाता था। मिस्र में लोगों के समुदाय राज्य के बड़े निर्माण प्रोजेक्ट जैसे पिरामिडों के निर्माण हेतु अपने श्रम का अल्पकालिक दान करते थे। बहुत संभव है कि राज्य दैनिक राशन आवंटन द्वारा उनके ठहरने और खाने-पीने की व्यवस्था करता रहा हो।

कांस्य युगीन समाज धर्म से भी काफी प्रभावित थे। ब्रूस ट्रिगर (2003: 409) ध्यान दिलाते हैं कि 'मिस्रवासियों के पास ''धर्म'' के लिए कोई शब्द नहीं था। धर्म दैनिक जीवन से अभिन्न था... प्राचीन मिस्र में राज्य के काम-काज, रोज़मर्रा की ज़िन्दगी, और भौतिक संस्कृति के सभी पक्ष धार्मिक विश्वासों और प्रतीकवाद के रंग में रंगे थे।' भविष्यवाणियों पर ज़ोर, कई देवताओं में विश्वास और, शहर के अधिष्ठाता देव-मंदिरों की केन्द्रीय अवस्थितियों में हम धर्म के महत्व को देख सकते हैं। मंदिर शहर के हृदयस्थल भी थे और नगरवासियों का जीवन अधिकांशतः मंदिरों के गिर्द ही घूमता था। ऐसा प्रतीत होता है कि बहु देवों में विश्वास था और प्रत्येक नगर के अपने अधिष्ठाता देव या देवी होते थे लेकिन दूसरे देवों को समर्पित मंदिर भी थे। मंदिर से बहुत अधिक गौरव जुड़ा था और पूजा स्थलों के निर्माण और भवनों के लिए सामग्रियाँ बहुत दूर-दूर से लायी जाती थीं।

जैसा कि हमने ऊपर देखा कि मेसोपोटामिया के बड़े मंदिर स्वयं में एक संस्थान थे। बहुत संभव है कि सत्ता मंदिरों और उसके कर्मचारियों के हाथों में केन्द्रित रही हो और देवताओं को समस्त भूमियों और खेतों का स्वामी समझा जाता हो तथा अनाज, दही, मछली और दूसरी अन्य खाद्य सामग्रियाँ उनको अर्पित की जाती हों। इस प्रकार मंदिर समुदाय के अन्नागार का काम भी करते हों। तीसरी सहस्त्राब्दी के मध्य तक आते-आते मंदिर की सत्ता को मेसोपोटामिया नगर-राज्यों के राजवंशों के उदय से आघात पहुँचा। क्योंकि कहा जाने लगा, 'राजशाही स्वर्ग से उतरी थी'। सत्ता जो पहले विशिष्ट व्यक्तियों और परिवारों के हाथों में केन्द्रित रहती आई थीं, अलौकिक और सांसारिक दोनों प्रकार की शक्तियां, वह अब दो भागों में विभाजित हो गयी। नगर-राज्यों के अनवरत चलने वाले प्रान्तिक युद्ध और योद्धा-सरदारों के उदय ऐसे तथ्य हैं जिसने धर्म से अलग सत्ता-केन्द्रों की राह बनायी।

राजा को हम कुछ खास मौकों पर आह्वान का धार्मिक अनुष्ठान करता हुआ भी देख सकते हैं, मसलन किसी मंदिर-भवन के उद्घाटन पर, या फसली ऋतुओं के आरंभ और अंत पर, बोने और काटने के मौकों पर। यह उस पुरातन अतीत का अवशेष था जब एक ही व्यक्ति सांसारिक और धार्मिक दोनों भूमिकाओं का निष्पादन करता था और जिसमें धीरे-धीरे, समय के साथ विभाजन होता गया और फिर जिन्हें अलग-अलग व्यक्ति करने लगे। इसकी प्रबल संभावना है कि राजा धरती पर ईश्वर का मनुष्य रूप माना जाता था।

धार्मिक प्रवृत्तियों के अतिरिक्त मृत्यु सम्बन्धित सामाजिक अनुष्ठान भी महत्वपूर्ण थे। इनके बारे में शोध पुरातत्त्व से संभव है क्योंकि कांस्य युग के लोग मृतकों को दफनाने की प्रथा का पालन करते थे। दफनाने की प्रथा न केवल आनुष्ठानिक पहलुओं को समझने में कारगर है बल्कि यह भी दर्शाती है कि सामाजिक ऊंच-नीच कैसे काम करती थी। उदाहरण के लिए, कफ़न में लिपटी सामान्य जनों की साधारण क़ब्रों के विपरीत मिस्र के पिरामिड उन आनुष्ठानिक स्थलों को प्रतिबिंबित करते हैं जहाँ समाज की उच्च श्रेणियाँ दफनायी जाती थीं (विस्तार के लिए इस पाठ्यक्रम की **इकाई 8** देखें)। पिरामिडों के निर्माण और उनमें जमा संपत्ति दर्शाते हैं कि समाज की उच्च श्रेणियों के हाथों में कितनी अकूत संपदा थी जिसे मरे हुओं के हवाले किया जा सकता था। उर में स्थित राजकीय कब्रिस्तान भी इसी तरह से मृतक के साथ अकूत संपदा के अवतरण का प्रतिबिम्ब है।

बोध प्रश्न-3

1) लेखन के विकास के लिए ज़रूरी कारकों की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्राचीन मेसोपोटामिया की लिपि का नाम बताएँ। बताएँ कि यह कैसे लिखी जाती थी।

.....

.....

.....

.....

.....

3) क्या कांस्य युगीन अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर थी? धातुओं की इसकी ज़रुरत कैसे पूरी होती थी?

.....

.....

.....

.....

.....

4) प्राचीन मेसोपोटामिया में मंदिरों की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

7.11 सारांश

इस प्रकार हम देखते हैं कि कांस्य युगीन संसार जटिल था जहाँ विभिन्न आबादियाँ अधिकतर शहरी केन्द्रों में अवस्थित थीं। यह एक ऐसी दुनिया थी जो लोगों के बीच नातेदारी के महत्व को प्रकट करती है,। हालांकि लोग शहरी क्षेत्रों में आपस में अजनबी स्थितियों में रहते थे। तांबा और टिन के साथ-साथ अन्य ज़रूरी कच्चे माल पर निर्भर रहने के कारण अलग-अलग इलाकों और विविध समुदायों के बीच विस्तृत आदान-प्रदान संभव हुआ। कांस्य युग अपने पूर्ववर्तियों और परवर्तियों की तुलना में काफी विस्तृत था। इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था के

रूप में कांस्य युग, नगरीकरण पर अपने ज़ोर, दूरस्थ संपर्क, सामाजिक विविधता, आदिम राजनीतिक संरचना, विशेषीकृत अर्थव्यवस्था और अपनी सभ्यतामूलक प्रकृति के कारण बहुत महत्वपूर्ण है।

7.12 शब्दावली

बिल्लौर (Chert) : महीन रवायुक्त अवसादी चट्टान जो माइक्रोक्रिस्टलाइन या क्रिप्टोक्रिस्टेलाइन सिलिका जैसे पदार्थों से बनी होती है।

कीलाकार (Cuneiform) : कील या फन्नी के आकार का चिह्न स्वरूप लेखन जिसे सरकंडों के कटे हुए किनारों वाले औज़ार से बनाया जाता था। सुमेरियाई लोगों द्वारा अविष्कृत कीलाकार लिपि लेखन की सबसे आरम्भिक पद्धतियों में एक है।

चित्रलिपि (Hieroghyphs) : प्राचीन मिस्री लेखन तंत्र का एक अक्षर। यह किसी वस्तु का शैलीकृत चित्र होता था जो किसी शब्द, शब्दांश या ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता था।

ओइकोइ (Oikoi) : प्राचीन ग्रीक शब्द जिसमें तीन सम्बन्धित लेकिन भिन्न अवधारणायें शामिल हैं: परिवार, पारिवारिक संपत्ति, और घर।

बहुदेववाद : एक से ज़्यादा ईश्वर पर आस्था।

7.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 7.2 देखें

2) भाग 7.3 देखें

3) a (i); b (iv); c (ii); d (iii)

बोध प्रश्न-2

1) ज़्यादा जटिल आकारों के निर्माण की योग्यता, औज़ार उत्पादन में लाभप्रद, विशेषीकृत धातुकर्मियों का संभावित उद्भव, गतिशीलता। विस्तार के लिए भाग 7.5 देखें

2) भाग 7.6 देखें

3) भाग 7.7 देखें

4) श्रम के विनियोजन की व्याख्या करें। भाग 7.7 देखें

बोध प्रश्न-3

1) विशाल भू-सम्पत्तियों के विविध प्रकार के रिकॉर्ड रखने के लिए। आरंभिक रिकॉर्डों में उल्लिखित विविध अवयवों की सूची बनाएँ। भाग 7.8 देखें

2) भाग 7.8 का बॉक्स देखें

3) नहीं, कांस्य युग की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर नहीं थी। लम्बी दूरी के व्यापार की चर्चा करें। भाग 7.9 देखें

4) भाग 7.10 देखें

7.14 संदर्भ ग्रंथ

एडम्स, रॉबर्ट मैककॉमिक.1972. 'पैटर्नस ऑफ अर्बेनाइज़ेशन इन अर्ली सदर्न मेसोपोटामिया', पी.जे. उको, आर. ट्रिंघम और जी.डब्ल्यू. डिम्बलबे. (संपा.). *मैन, सेटलमेंट एंड अर्बेनिस्म*, लंदनः डकवर्थ, पृ. 735-749.

चाइल्ड, वी.जी. 1930. *द ब्रांज ऐज.* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

चाइल्ड, वी.जी. 1950. 'द अर्बन रेवोल्यूशन', *द टाउन प्लानिंग रिव्यू,* 21(1): 3-17.

चाइल्ड, वी. गॉर्डन. 1957, 'द ब्रांज ऐज', *पास्ट एंड प्रेज़ेन्ट,* 12 (नवम्बर): 2-15.

डाल्ली, स्टेफनी. 1989. *मिथ्स फ्रॉम मेसोपोटामिया.* ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

केम्प. बैरी. 1991. *एनसिएंट ईजिप्ट.* लंदन और न्यूयॉर्कः रूटलेज.

पोलॉक, सुसान. 1999. *एनसिएंट मेसोपोटामिया.* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

पोस्टगेट, जे.एन. 1992. *अर्ली मेसोपोटामियाः सोसाइटी एंड इकॉनमी एट द डान ऑफ़ हिस्ट्री.* लंदन और न्यूयॉर्कः रूटलेज.

रत्नानागर, एस. 2001. *अंडरस्टैंडिंग हडप्पा सिविलाईजेशन इन द ग्रेटर इंडस वैली.* नई दिल्लीः तूलिका.

ट्रिगर, ब्रूस जी. 2003. *अंडरस्टैंडिंग अर्ली सिविलाइज़ेशन्सः ए कम्पेरेटिव स्टडी,* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

विर्थ, एल. 1938. 'अर्बेनिस्म एज अ वे ऑफ़ लाइफ', *अमेरिकन जर्नल ऑफ सोसिऑलजि* 44(1): 1-24.

पी डी एफः

https://www.jstor.org/stable/pdf/503771.pdf?refreqid=excelsior%3Aa01af96041a8c040f1a2a8a8c8b5fbb3

7.15 शैक्षणिक वीडियो

ब्रांज़ ऐज मिनीसीरीज़, भाग 1-3ः
https://www.youtube.com/watch?v=jt1aWllpChs (Part 1)
https://www.youtube.com/watch?v=KLhJc3gS-BQ (Part 2)
https://www.youtube.com/watch?v=mvH2q0q4iDs (Part 3)

ब्रांज़ ऐज कोलाप्सः नेशनल ज्यॉग्राफिक डॉक्यूमेंट्री, 2010ः
https://www.youtube.com/watch?v=t6_VGLy2gKM